10

विद्यालय – अनुभव कार्यक्रम से जुड़ी कुछ स्मृतियाँ

अशोक कुमार*

प्रशिक्षक – प्रशिक्षण की हैसियत के तहत विद्यालय कार्यक्रम अनुभव के लिए जब मैं विद्यालयों में गया, तो कुछ ऐसे अनुभव हुए जो अनापेक्षित थे। मैं जिस तस्वीर को अपने मानस में रखकर गया, वह तस्वीर बहुत ही धुँधली नज़र आई या सीधे शब्दों में कहूँ तो जैसा माहौल मुझे और मेरे विद्यार्थियों को मिलना चाहिए था वह वहाँ नज़र नहीं आया। एक अध्यापक बनने के लिए सिर्फ संस्था में ही प्रशिक्षण ज़रूरी नहीं होता बल्कि विद्यालयों से भी एक खास किस्म के माहौल की अपेक्षा रहती है, लेकिन वह मुझे विद्यालयों में नहीं मिला। मैं इस लेख के द्वारा उसी माहौल को बयाँ करने की कोशिश करना चाहता हूँ।

शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान होने वाली क्रियाएँ –

1. स्कूल में विद्यार्थी-शिक्षकों का परिचय कराना –

जब मैं पहले दिन विद्यालय में गया तो मैं यह सोचकर गया था कि प्रधानाचार्य द्वारा मेरे विद्यार्थियों का परिचय बड़े ही ज़ोर-शोर से कराया जाएगा क्योंकि विद्यार्थी-शिक्षक विद्यालय के शिक्षण व अन्य कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होंगे। लेकिन यहाँ मैंने ऐसा कुछ भी नहीं पाया, यहाँ तो तस्वीर बिलकुल विपरीत नज़र आई अर्थात् प्रधानाचार्य या विद्यालय के नियत अध्यापक द्वारा प्रात: प्रार्थना स्थल पर विद्यार्थी-शिक्षकों का किसी भी प्रकार का परिचय नहीं कराया गया था, जिसके कारण विद्यार्थी-शिक्षक उस स्कूल प्राँगण में अजनबी महसूस कर रहे थे। जिसके कारण उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है और ये विद्यार्थी-शिक्षक अपने आप को कभी भी भावात्मक रूप से स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं। इस तरह का व्यवहार विद्यार्थी-शिक्षकों में आत्मविश्वास पैदा होने में बाधक सिद्ध होता है और मैंने यह महसूस किया कि इसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम पर पड़ता है और अंत में विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण शिक्षण के प्रति नकारात्मक होता चला जाता है।

अत: विद्यालयों में विद्यार्थी-शिक्षकों का परिचय विद्यालय के एक उत्तरदायी शिक्षक के रूप में कराना चाहिए। जिससे विद्यार्थी-शिक्षकों का आत्मविश्वास बढ़े और उनका शिक्षण के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण भी बने।

* *प्रवक्ता,* डाईट, आर.के.पुरम, नयी दिल्ली 110022

विद्यालय के नियत (औपचारिक) अध्यापकों का विद्यार्थी – शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण

दूसरे महत्वपूर्ण बिंदु पर मैंने महसूस किया कि जैसे ही मैं विद्यालय में जाता तो सभी विद्यार्थी-शिक्षकों की चहल-पहल बढ़ जाती थी, मानो सारे विद्यार्थी-शिक्षक अपनापन-सा महसूस करते थे। मैं सभी से यह जानने की कोशिश करता था, बताओ सब कैसा चल रहा है? इस पर सभी की क्रिया-प्रतिक्रिया बड़ी अनापेक्षित सी होती थी। अंत में मैंने महसूस किया कि विद्यालय के नियत अध्यापकों का दृष्टिकोण विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये नकारात्मक होता है। वे विद्यालय में आने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों को अनचाहे मेहमान मानते हैं।

विद्यार्थी-शिक्षकों की सहायता व सहयोग करने के बजाय उनसे द्वेष रखना शुरू कर देते हैं। उन्हें सारे दिन आदेश व निर्देश देते रहते हैं और उन्हें केवल आभासी अध्यापक ही मानते हैं। कभी कभी तो नियत अध्यापक अपनी सारी सीमाएँ तोड़कर कक्षा में विद्यार्थी-शिक्षकों की बुराई करना शुरू कर देते हैं। जिसका नकारात्मक प्रभाव कक्षा के छात्रों पर पड़ता है और फ़िर अनुशासन की समस्या पैदा होती है। सबसे बड़ी चुनौती उन विद्यार्थी-शिक्षकों के सामने आती है, जो अन्य राज्यों से आते हैं। वे अपनी क्षेत्रीय भाषा में बोलते हैं अन्य भाषा समझने में परेशानी महसूस करते हैं। इस तरह की स्थिति में विद्यालय अध्यापक उनकी सहायता करने के बजाए उनका मज़ाक उड़ाते हैं और विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रति उनका दृष्टिकोण नकारात्मक होता है।

विद्यालय की क्रियाओं में विद्यार्थी-शिक्षकों का भाग लेना या सम्मिलित करना

जब मैंने विद्यालय के प्रधानाचार्य व अन्य शिक्षकों से बात की तो मैंने महसूस किया कि वे विद्यार्थी-शिक्षकों को विद्यालय की अधिकतर क्रियाओं में शामिल करना पसंद नहीं करते थे। लेकिन जिस तरह शिक्षण मुख्य रूप से अनुभवों की आवश्यकता का आदान-प्रदान है, तो इसके लिए शिक्षण में अनेक अनुभवों की आवश्यकता होती है। इसलिए विद्यार्थी-शिक्षकों को स्कूल की सभी क्रियाओं में भाग लेना आवश्यक हो जाता है। यह मुख्य दायित्व स्कूल के प्रधानाचार्य का बन जाता है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी-शिक्षक को स्कूल की सभी क्रियाओं में सम्मिलित करें। पर सच्चाई यह है कि उन्हें स्कूल की अनेक बैठकों में शामिल नहीं किया जाता है। विद्यालय के शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थी-शिक्षकों के अपरिपक्व अनुभव के कारण वे कोई महत्वपूर्ण सुझाव नहीं दे पाएँगे। इसलिए उन्हें स्कूल की महत्वपूर्ण क्रियाओं से वंचित रखा जाता है और जिसका प्रभाव उनके वास्तविक शिक्षण पर नज़र आता है।

कक्षा में विद्यार्थियों का अनुशासन

विद्यार्थियों को पहले से उनके नियत शिक्षकों के द्वारा अप्रभावित परिचय विद्यालय के अनुशासन की एक समस्या बन जाती है। अकसर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को कक्षा में इस तरह निर्देशित किया जाता है, जैसे ये अध्यापक ही नहीं हैं उदाहरण के लिए ''बच्चों ध्यान से पढ़ना, ये बच्चे अपना प्रशिक्षण पूरा करने के लिए कुछ दिन तुम्हें

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 57 28-12-2015 AM 11:56:56

पढ़ाएँगे, इनको ज़्यादा परेशान मत करना'' कक्षा में ज़्यादा शोर मत करना। इस तरह के दृष्टिकोण के कारण कक्षा में सभी क्रियाकलापों को विद्यार्थी शिक्षक पूरा करने में असमर्थ होते हैं। जिसका प्रभाव कक्षा के अनुशासन पर पड़ता है। कभी-कभी तो स्कूल के विद्यार्थी, विद्यार्थी-शिक्षकों के साथ अभद्र व्यवहार करने में भी नहीं सकुचाते हैं। इस तरह जब नियत अध्यापकों द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों का सहयोग नहीं होता तो विद्यालय में अनुशासन की समस्या बन जाती है। अंतत:जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से उनके शिक्षण पर प्रभाव पड़ता है।

शिक्षण-अधिगम सहायक सामग्री की विद्यालयों में उपलब्धता

विद्यालयों में जाने से पहले जिस तरह की तस्वीर मेरे ज़ेहन में थी कि विद्यालय में विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री की उपलब्धता उचित मात्रा में होगी, जिससे विद्यार्थी–शिक्षकों के शिक्षण में सुधार होगा पर यह सोच पूर्ण रूप से विपरीत निकली, मैंने यह महसूस किया कि कुछ विद्यालयों में तो शिक्षण-अधिगम सहायक सामग्री उचित मात्रा में उपलब्ध ही नहीं है जिसके कारण ये सहायक सामग्री विद्यार्थी–शिक्षकों को उपलब्ध नहीं कराई जाती लेकिन जिन विद्यालयों में उचित मात्रा में यह सामग्री उपलब्ध है तो भी नियत शिक्षकों द्वारा उसका प्रयोग नहीं करने की अनुमति होती है। जिसके कारण कई विद्यार्थी–शिक्षक शिक्षण सामग्री जुटाने में लगे रहते हैं। अधिकतर समय यह सामग्री जुटाने में ही निकल जाता है। इस तरह विद्यालयों द्वारा उनका दोहरा व्यवहार विद्यार्थी–शिक्षकों के दृष्टिकोण पर पड़ता है और अंत में उनके भविष्य के शिक्षण पर पड़ता है।

निष्कर्ष व सुझाव

भविष्य के लिए अच्छे अध्यापक निर्माण के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण में विद्यालय के अनुभवों का बहुत महत्व है। इस प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थी-शिक्षक का आत्मविश्वास बढ़ता है तथा विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों का विकास होता है। जो एक विद्यार्थी-शिक्षक के शिक्षण को प्रभावशाली बनाता है। शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण होती है। मेरे अनुभव के अनुसार इस प्रक्रिया के शुरू होने से पहले विद्यार्थी-शिक्षकों के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर विद्यालयों के साथ भली प्रकार चर्चा करनी चाहिए। इस तरह विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में होने वाली विभिन्न बाधाओं से बचा जा सकता है और विद्यार्थी-शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावशील बनाया जा सकता है।

विद्यालयों को विद्यार्थी-शिक्षकों के साथ दोहरा व्यवहार नहीं करना चाहिए तथा समय-समय पर विद्यालय में उनके प्रदर्शन की सराहना करके उनके मनोबल व आत्मसम्मान को बढ़ाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण शिक्षण के प्रति धनात्मक बनें। सबसे महत्वपूर्ण बिंदु विद्यालयी अनुशासन का है, अनुशासन को बनाए रखने के लिए विद्यार्थी-शिक्षकों की सहायता की जानी चाहिए व उन्हें प्रधानाचार्य व अध्यापकों द्वारा मार्गदर्शन मिलते

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 58 28-12-2015 AM 11:56:56

रहना चाहिए। इस तरह के सहयोग से उनमें बहुत से कौशलों का विकास किया जा सकता है। जिसके कारण उनके भविष्य में शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है और इस तरह के सुधार का प्रभाव कहीं न कहीं राष्ट्र के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

❑❑❑

निरंतर विकास करना जीवन का नियम है, और जो व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए हमेशा अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को गलत स्थिति में पहुँचा देता है।

विश्व के सभी धर्म, भले ही और चीज़ों में अंतर रखते हों, लेकिन सभी इस बात पर एकमत हैं कि दुनिया में कुछ नहीं बस सत्य ही जीवित रहता है।

महात्मा गांधी

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 59 28-12-2015 AM 11:56:56